बदलती राहें

Ministry of Social Justice & Empowerment
Gunjan
NISD
वर्ष 01, अंक 38
धर्मशाला, सोमवार, 16 नवंबर 2015

नशे की पैदावार को लेकर हिमाचल पर सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी चिंताजनक

- नशे के उत्पादकों पर अंकुश के लिए करने पड़ेंगे सख्त प्रयास
- महज नशा ढोने वालों को पकड़कर नहीं बचाई जा सकती युवा पीढ़ी

नई दिल्ली। हिमाचल प्रदेश में अफीम और अन्य प्रतिबंधित नशीले पदार्थों के उत्पादन को लेकर हाल ही में माननीय सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय प्रदेश सराकर के लिए किसी चुनौती से कम नहीं है। प्रदेश में व्यापक स्तर पर नशीले

पदार्थों की खेती हो रही है, यह बात किसी से छिपी नहीं है। साथ ही यह बात भी साफ है कि प्रदेश में सरकार नशे के सप्लाई करने वालों को पकड़ने की मुहिम चलाने के अलावा इसकी खेती को नितोत्साहित नहीं कर पा रही है। नशा पैदा करने वाले ऐसे क्षेत्रों से संबंधित लोग हैं, जहां रोजगार के ज्यादा संसाधन नहीं है। वे थोड़ी सी रकम के लिए युवा पीढ़ी को बर्बाद करने का सामान पैदा कर रहे हैं। वहीं नशे के इस कारोबार को चलाने वाली बड़ी मछलियां मोटी कमाई करती हैं। सिर्फ बर्बाद होते हैं नशे को ढोकर ठिकाने पर पहुंचाने वाले या फिर नशे की लत का शिकार लोग।

कुल मिलाकर नशे को जड़ से खत्म करने और इसके शिकार लोगों को इसकी लत से बाहर निकालने के लिए प्रदेश सरकार आज तक कोई नीति नहीं बना पाई है। इसके कारण बर्बादी सिर्फ युवा वर्ग की ही हो रही है। या तो वे नशे की सप्लाई के कारोबार में धकेले जाने से कानून के शिकंजे में आ जाते हैं या फिर नशे के चलते शारीरिक व मानसीक तौर पर बीमार हो जाते हैं। इसका असर समाज पर दिनों दिन गहराता जा रहा है। हालत यह है कि दुनिया की हर बीमारी के इलाज के लिए तो सरकार ने जगह-जगह अस्पताल खोल रखे हैं, मगर नशे की बीमारी का इलाज चाहने पर भी नहीं हो पा रहा है।

अब बात करते हैं सुप्रीम कोर्ट के उस निर्णय कि जिसमें हिमाचल प्रदेश को नशे के उत्पादक प्रदेश के तौर पर देखते हुए सरकार को चेतावनी जारी की गई है। हाल ही में आए निर्णय में सुप्रीम कोर्ट ने हिमाचल प्रदेश सरकार को अफीम और अन्य प्रतिबंधित पदार्थों के उत्पादन पर रोक लगाने के लिए कहा है। शीर्ष अदालत ने पाया कि प्रदेश में प्रतिबंधित पदार्थों के उत्पादन से न केवल वहां बल्कि आसपास के राज्यों पर भी असर पर रहा है। इससे युवा वर्ग भ्रमित हो रहा है।

न्यायमूर्ति टीएस ठाकुर की अध्यक्षता वाली दो सदस्यीय पीठ ने हिमाचल प्रदेश में प्रतिबंधित पदार्थों के हो रहे उत्पादन पर नाराजगी जताते हुए पहाड़ों पर होने वाली प्रतिबंधित पदार्थों की होने वाली खेती पर रोक लगाने के लिए कहा।

इस मामला माननीय सर्वोच्च न्यायालय के ध्यान में तब आया जब चरस के साथ पकड़े गए हरियाणा के दो युवकों ने हिमाचल की अदालतों से मिली कठोर सजा को चुनौती दी। मामले की सुनवाई के दौरान सर्वोच्च अदालत ने पाया कि नशे का कारेबार करने वाले व इसकी पैदावार करने वाले तो सुरक्षित बच रहे हैं और उनके किए की सजा नशे को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाने का काम करने वाले भुगत रहे हैं। हालांकि इस कारोबार में शामिल कैरियर भी दोषी हैं, मगर वे अपने इस कुकृत्य के लिए कठोर सजा पाकर अपनी जिंदगी सलाखों में बिता देते हैं। वहीं इस कारोबार को चलाने वाले किसी ओर को अपना शिकार बनाकर अपना धंधा चलाए हुए हैं। इससे कठोर कानून के बावजूद नशे का कारोबार रूक नहीं पा रहा है।

उधर, इन दोनों युवकों की सजा की मात्रा पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने टिप्पणी करते हुए हिमाचल प्रदेश सरकार से कहा कि इन लोगों को पकड़ने से क्या होगा। पहले उन लोगों को पकड़ना चाहिए जो इस तरह के नशे का उत्पादन कर रहे हैं। पीठ ने कहा कि पहले रोग की पहचान करनी चाहिए न कि रोगियों के इलाज पर पूरा ध्यान देना चाहिए। पीठ ने पाया कि वास्तव में नशे के बढ़ते कारोबार की जड़ उसका उत्पादन करना है। लिहाजा इसके उत्पादन पर ही रोक लगनी चाहिए।

हिमाचल प्रदेश पुलिस ने 28 जनवरी 2013 को बाइक पर सवार दो युवक राकेश कुमार और सिया राम को 885 ग्राम चरस के साथ गिरफ्तार किया था। राकेश बाइक चला रहा था जबकि सिया राम पीछे बैठा था। सिया राम के बैग से चरस बरामद हुआ था। राकेश और सिया राम दोनों हरियाणा के कैथल जिले के रहने वाले थे। ट्रायल कोर्ट ने दोनों को आठ साल कैद की सजा सुनाई थी। साथ ही दोनों पर 80-80 हजार रुपये का जुर्माना भी किया गया था। हाईकोर्ट ने भी उनकी दोषसिद्धि को सही ठहराया था। हाईकोर्ट ने सिया राम की सजा आठ साल से घटाकर पांच साल कर दी थी, लेकिन राकेश की आठ वर्ष की कैद को बहाल रखा था। हालांकि, सुप्रीम कोर्ट ने दोनों की सजा तीन-तीन वर्ष कर दी है। अदालत ने पाया कि दोनों युवक हैं और वे तो महज कैरियर हैं।

कुल्लू का मलाणा और चंबा का चुराह हैं गढ़

हिमाचल प्रदेश में जिला कुल्लू का मलाणा और चंबा जिला का चुराह क्षेत्र चरस की पैदावार के लिए काफी बदनाम हैं। इन दोनों क्षेत्रों में नशे की पैदावार होने के बावजूद आज तक इसे पूरी तरह रोकने में प्रदेश सरकार विफल रही है। हर बार पुलिस की मदद से अभियान चलाए जाते हैं। नशे के कैरियर का काम करने वाले लोगों से जेलें भर दी जाती हैं, मगर आज तक इस कारोबार के उत्पादक से लेकर सप्लायर तक के नेटवर्क को नहीं तोड़ा जा सका है। एक कैरियर पकड़ा जाता है, तो वे भारी रकम का लालच देकर किसी ओर को फांस लेते हैं। वहीं बड़ी बात यह है कि अधिकतर नशे के आदि लोगों की मजबूरी का भी फायदा उठाया जाता है।

अब देखना यह है कि युवाओं को बर्बाद करने वाले इन नशे के कारोबारियों व उत्पादकों पर शिकंजा कसने के लिए सरकार क्या प्रयास करेगी। वैसे भी देवभूमि के लिए विश्व विख्यात हिमाचल प्रदेश के लिए नशे के उत्पादक प्रदेश का तमगा किसी लांछन से कम नहीं है।

कोलकाता की सीमा को चालक पति दे गया तानों भारी जिंदगी

- पति की एचआईवी से मौत के बाद ससुराल से नहीं मिला सहारा
- एक बच्चे की परवरिश के लिए वापस लौटना पड़ा कोलकाता

कोलकाता की रहने वाली सीमा के लिए उसके पति के जरिये मिली एक ऐसी बीमारी ने मुसीबत में डाल दिया, जिसके बारे में वह जानती तक नहीं थी। सीमा का पति जिला कांगड़ा के जयसिंहपुर का रहने वाला था और चालक था। उसकी पहले भी शादी हो चुकी थी और दो बच्चों का पिता था। सीमा को दूसरी शादी करके लाया गया। तब उसकी आयु 47 वर्ष थी। सीमा को उसके ससुराल वाले पसंद करते थे और जैसे तैसे वह परिवार में घुल मिलकर रहने लगी। उसे एक बात नहीं पता थी कि उसका पति एचआईवी पाजिटिव है। शादी के बाद उसे एक बेटा भी हुआ। इस बीच सीमा का पति बीमार रहने लगा और एक दिन ज्यादा बीमार होने के कारण उसकी मौत हो गई। पति की मौत होते ही सीमा पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। उसकी पति की मौत का कारण उसके परिवार वालों को पता चल चुका था। इसके बाद जब सीमा का टैस्ट हुआ तो वह भी एचआईवी पाजिटिव पाई गई। उसके लिए राहत वाली बात यह थी कि उसका बेटा एचआईवी नेगेटिव था।

सीमा के लिए मुसीबत तब खड़ी हुई, जब उसके ससुराल वाले उसके पति की गलती के लिए उसे ही दोषी ठहराने लगे। कोलकाता की होने के कारण वे उस पर ही शक कर रहे थे और ये कहने लगे कि उसके कारण ही उनके बेटे की मौत हुई है। उसके बाद परिवार वालों ने उसे एक अलग से कमरा दे दिया और उसका खाना-पीना अलग-अलग हो गया। सास हमेशा ताना मारती कि तू अपने बेटे को लेकर यहां से चली जा।

कोई मदद न मिलने के लिए उसके लिए अपना व बेटे का खर्च चलाना मुश्किल हो गया। उसकी सेहत कमजोर होने के कारण वह काम भी नहीं कर सकती थी।

सीमा अपनी दवाई के लिए टांडा आती रहती थी। यहां उसकी मुलाकात कम्युनिटी केयर एंड स्पोर्ट सेंटर के काऊंसर से हुई। उसने अपने परिवार की स्थिति के बारे में बताया तो उसे काऊंसर ने उससे पूछा कि उसके मायके वाले उसकी मदद कर सकते हैं। इस पर सीमा ने हां कहा, तो सीएससी की ओर से उसके मायके बात की गई। फिर सीएससी ने ही सीमा के ससुराल से उसके पति की जायदात में से उसका हिस्सा ले कर दे दिया। इस बीच सीमा के मायके वालों ने उसे कोलकाता में ही काम दिलवा दिया। वहां उसके भाई ने भी उसकी काफी मदद की है। इसके चलते वह अपने बच्चे को लेकर कोलकाता चली गई। वहां उसको नियमित दवाई के लिए कार्ड भी बनवा दिया गया है। इससे अब उसकी हालत सुधर गई है।

सीमा ने अपने ससुराल में अपना हिस्सा भी नहीं छोड़ा है। वह यहां साल में दो बार आती है और अपने घर में कुछ देर रुकने के बाद वापस लौट जाती है। सीमा ने बताया कि कोलकाता में काम मिलने के कारण वह अपने बच्चे का सही ढंग से पालन-पोषण कर पा रही है। वहां उसके मायके वाले भी उसकी मदद करते हैं। ऐसे में वह ससुराल में रहकर तानों व बेकारी से बच गई है। सीमा बताती है कि जब वह अपने ससुराल में थी तो मनरोगा में दिहाड़ी लगाकर अपना खर्च चलाने लगी थी, मगर पीछे से उसका बच्चा घर में ही रहता था। वहां उसके ससुराल वाले उसके बच्चे को भी गलत बातें सीखने लगे थे। इस कारण उसके भविष्य को लेकर उसके चिंता सताने लगी थी।

सीमा ने बताया कि सीएससी की सहायता से वह आज अपने मायके में ही खुशी से रह रही है और ससुराल में उसके बेटे का हिस्सा भी उसे मिल गया है। उसने बताया कि कोलकाता में वह अपने बच्चे को अच्छी पढ़ाई करवा सकती है। सीमा जब हिमाचल आती है, तो वह टांडा भी आती है। यहां से भी वह अपनी दवा ले जाती है। उसे कोलकाता में भी स्थित सेंटर में भी पंजीकृत करवा दिया गया है। वहां भी उसे दवाई मिल जाती है। इस तरह एचआईवी पाजीटिव होने के चलते मिलने वाले सामाजिक तिरस्कार की बाधा को वह पार कर चुकी है।

अब उसका ध्यान अपने बेटे के भविष्य की ओर है। हालांकि उसे इस बात का दर्द जरूर है कि इस हालत के लिए उसे ही दोषा माना गया, जबकि वह खुद अपने पति की गलति का शिकार हुई थी।

तनाव से सावधान, हो सकता है अस्थमा

तनाव से सेहत पर अप्रत्यक्ष ही नहीं, प्रत्यक्ष और गंभीर प्रभाव भी पड़ते हैं। ताजा शोध के मुताबिक तनाव के प्रति ज्यादा संवेदनशील या आशंका से घिरे रहने वालों में फेफड़े की कार्यप्रणाली पर प्रभाव पड़ता है और अस्थमा के लक्षण बढ़ जाते हैं। शोधकर्ताओं का कहना है कि तनाव कम करने के लिए दिया जाने वाला इलाज अस्थमा के मरीजों को फेफड़े की बीमारी से निपटने में सहायता कर सकता है। इस शोध के अनुसार जब व्यक्ति को तनाव के साथ अस्थमा की परेशानी भी होती है तो स्थिति ज्यादा जटिल और खतरनाक हो जाती है।

ऐसे मरीजों को अस्थमा पर नियंत्रण करने में परेशानी का सामना करना पड़ता है। अमेरिका की सिनसिनाटी यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने कॉलेज के 101 ऐसे बच्चों को शोध में शामिल किया जिन्हें अस्थमा की शिकायत थी। शोध के दौरान प्रतिकूल परिस्थिति में ज्यादा संवेदनशील या सशंकित रहने वालों में अन्य की तुलना में अस्थमा के लक्षण ज्यादा गंभीर पाए गए।

शेयर बाजार भी है एक सफल करियर की राह

खुली अर्थव्यवस्था ने भारत के आर्थिक एवं वित्तीय क्षेत्र को सफलताओं के नए पंख लगा दिए हैं। आर्थिक एवं वित्तीय क्षेत्र नित नई ऊंचाइयों को स्पर्श कर रहा है। कोई सोच भी नहीं सकता था कि 1990 में जो बीएसई सूचकांक 1,000 था, वह वर्तमान में 27,000 से भी अधिक की ऊंचाई पर जाते हुए दिखाई दे रहा है। इन सफलताओं से भारत की अर्थव्यवस्था को तो जबरजस्त मजबूती मिली ही है, साथ ही साथ रोजगार के अवसरों में भी भारी बढ़ोतरी होती जा रही है। अगर देखा जाए तो किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के स्वास्थ्य का अंदाजा मौजूदा समय में उसके शेयर बाजार के सूचकांक के उतार-चढ़ाव के आधार पर लगाया जा सकता है। सीधे शब्दों में कहें तो शेयर बाजार किसी भी देश की अर्थव्यवस्था का आईना है। यही वजह है कि आज यह क्षेत्र रोजगार के एक बेहतर विकल्प के रूप में उभरा है।

कैसे बढ़े हैं विकल्प

गौरतलब है कि भारतीय अर्थव्यवस्था में उदारीकरण से आम और खास आदमी के बीच निवेश की प्रवृत्ति का विकास हुआ है। यही वजह है कि अक्सर शेयर बाजार के नाम से घबराने वाला सामान्य व्यक्ति भी आज शेयर बाजार में विशेष रुचि लेने लगा है। शेयर बाजार में बड़े निवेशकों की बढ़ती रुचि के परिणामस्वरूप ही इन बाजारों में रोजगार के अवसरों में भारी इजाफा हुआ है। शेयर बाजार के कायदे-कानून इतने जटिल हैं कि इन्हें आम आदमी के लिए समझ पाना आसान नहीं है, जिसके चलते इन्हें समझने व क्रियान्वित करने के लिए प्रशिक्षित व्यक्तियों की जरूरत पड़ती है। शेयर बाजार में केवल शेयर खरीदने-बेचने का माध्यम बनने वाले ब्रोकर ही नहीं होते, बल्कि लगातार बढ़ते बाजार के कारण इसमें विभिन्न प्रकार के रोजगार की बेहतर संभावनाएं भी सामने आई हैं। दरअसल गैर-पारंपरिक कॅरियर के क्षेत्र में यह लोगों को खूब लुभा रहा है। बाजार में सेंसेक्स की ऊंचाई की भांति इसमें भी कॅरियर उड़ान भर रहा है। देशी-विदेशी निवेशकों की लगातार बढ़ती तादाद के कारण शेयर बाजार का तेजी से विस्तार हो रहा है। ऐसी स्थिति में यह स्वाभाविक है कि जब बाजार बढ़ रहा है, तो इसमें विभिन्न तरह का काम करने वालों की आवश्यकता भी होती है। अब ऑनलाइन कारोबार होने के कारण एक जगह बैठे-बैठे देश ही नहीं अपितु दुनिया के किसी भी स्टॉक मार्केट में डीलिंग की जा सकती है।

कहां-कहां हैं मौके

आम आदमी को अगर शेयर बाजार में निवेश करना है तो तमाम मुद्दों पर सलाह-मशविरे के लिए उन्हें विशेषज्ञ की आवश्यकता होती है। इसलिए इस क्षेत्र में कंसल्टेंसी के रूप में सर्वाधिक रोजगार के अवसर हैं। इसके अलावा मार्केट एनालिस्ट, रिसर्च एनालिस्ट या इक्विटी रिसर्चर के तौर पर भी रोजगार के अवसर हैं। तमाम इंवेस्टमेंट बैंक, म्युचुअल फंड कंपनियां, फाइनेंशियल इंस्टीट्यूट, फाइनेंशियल वेबसाइट, स्टॉक ब्रोकिंग फर्म और तो और फाइनेंशियल न्यूज पेपर्स आदि मे भी भरपूर रोजगार उपलब्ध हैं। इकोनॉमिस्ट, अकाउंटेंट, फाइनेंशियल एनालिस्ट ऐंड स्पेशलिस्ट, इंडस्ट्री स्पेशलिस्ट, कैपिटल मार्केट स्पेशलिस्ट, इन्वेस्टमेंट ऐंड फायनेंशियल प्लानर्स और ब्रोकर जैसे कार्यों से जुड़कर अच्छी खासी कमाई की जा सकती है। तमाम म्युचुअल फंड और वित्तीय कंपनियां बाजार के नए ट्रेंड पर नजर रखने के लिए कैपिटल मार्केट स्पेशलिस्ट की नियुक्तियां करती हैं। इनका मुख्य काम बाजार के रुख को भांपकर कंपनी के हित में वित्त संबंधी उचित सलाह-मशविरा देना है, वहीं सिक्योरिटीज एनालिस्ट का काम कंपनी को मार्केट की सही-सही जानकारी देना है। शेयर मार्केट में ब्रोकर का पेशा भी खासा लोकप्रिय है और इससे जुड़कर भरपूर पैसा कमाया जा सकता है।

कितनी है जरूरत

वित्तीय विशेषज्ञों के अनुसार वर्तमान समय में शेयर बाजार में 50 हजार प्रोफेशनल्स की जरूरत है, लेकिन केवल 10 हजार प्रोफेशनल्स ही मौजूद हैं और 2016 -17 तक शेयर बाजार में एक लाख प्रोफेशनलों की जरूरत होगी। प्रशिक्षित लोगों को इस क्षेत्र के विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थान हाथों-हाथ लेते हैं। कई विद्यार्थियों को तो कंपनियां अध्ययन के दौरान ही चयन कर लेती हैं। इस क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध कराने वालों में कोटक सिक्योरिटीज, आईएलएंडएफएस, एंजल ब्रोकिंग, इंडिया बुल्स आदि प्रमुख हैं।

क्या हो योग्यता

करियर के लिहाज से देखा जाए तो इस क्षेत्र में वही युवा बेहतर भविष्य बना सकता है जो तेज तर्रार, तुरंत निर्णय लेने में सक्षम हो, मार्केट की समझ रखता हो तथा तर्क-वितर्क तथा ग्राहक को डील करने के हुनर में माहिर हो। इसके अलावा इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए कंप्यूटर व इंटरनेट के इस्तेमाल में भी महारत हासिल होनी जरूरी है। अंग्रेजी का ज्ञान इस क्षेत्र के लिए अतिरिक्त योग्यता के रूप में देखा जाता है। अगर शैक्षिक योग्यता की बात करें तो वाणिज्य, अर्थशास्त्र, गणित, व विज्ञान विषय के छात्रों के लिए यह एक उम्दा कार्यक्षेत्र है।

क्या है अनिवार्यता

शेयर बाजार में धांधली एवं घोटालों से बचाव के लिए अब सरकार ने इसमें काम करने वाले लोगों के लिए सर्टिफिकेट कोर्स जैसी अनिवार्य शर्तें भी लगा दी हैं। सेबी ने सभी कैपिटल मार्केट के

कर्मचारियों के लिए यह अनिवार्य कर दिया है कि वे सभी फाइनेंशियल मार्केट के आठ केंद्रीय क्षेत्रों में एनएसई सर्टिफिकेट प्राप्त हों। यह नेशनल स्टॉक एक्सचेंज द्वारा प्रदान किया जाने वाला प्रमाणपत्र है। इसे प्राप्त कर लेने के पश्चात आप शेयर बाजार में अच्छा भविष्य बना सकते हैं। यह प्रमाणपत्र हर तीन वर्ष पश्चात रिन्यू भी करवाना पड़ता है।

कौन-कौन से हैं कोर्स

शेयर मार्केट में अपार संभावनाओं के मद्देनजर इस क्षेत्र में युवाओं का रुझान बढ़ा है। इसी बढ़ती मांग के तहत विभिन्न विश्वविद्यालयों व संस्थानों में इससे संबंधित पाठ्यक्रमों का संचालन भी तेजी से बढ़ा है। इस क्षेत्र में मुख्य रूप से कैपिटल मार्केट, डीलर मॉड्यूल व डैरिवेटिव्स फोर मॉड्यूल, सर्टिफिकेट प्रोग्राम ऑन कैपिटल मार्केट, पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन सर्टिफिकेट इंटरनेशनल इंवेस्टमेंट एनालिस्ट व कैपिटल मार्केट में पोस्ट ग्रेजुएशन डिप्लोमा कर सकते हैं। शेयर बाजार से जुड़ने के लिए चल रहे विभिन्न पोस्ट ग्रेजुएट पाठ्यक्रमों के लिए अभ्यर्थी का स्नातक होना अनिवार्य है।

कुछ संस्थानों में 50 प्रतिशत अंक से स्नातक उत्तीर्ण अभ्यर्थियों के लिए एक व दो वर्षीय डिप्लोमा व सर्टिफिकेट पाठ्ययक्रम कराए जाते हैं। इसके अतिरिक्त कई संस्थानों में प्रवेश परीक्षा में सामान्य ज्ञान व शेयर बाजार से जुड़े सामान्य प्रश्न भी पूछे जाते हैं। इस लिखित परीक्षा के पश्चात साक्षात्कार लिया जाता है। अंत में मेरिट के आधार पर दाखिला दिया जाता है।

कैसे करें शुरुआत

शेयर बाजार से संबंधित विभिन्न रोजगारोन्मुखी कोर्स कराने वाले विभिन्न संस्थानों द्वारा संचालित पाठ्यक्रमों के अलावा नेशनल स्टॉक एक्सचेंज द्वारा संचालित किया जाने वाला एनसीएफएम टेस्ट उत्तीर्ण कर टर्मिनल एग्जी क्यूटिव और टर्मिनल ऑपरेटर के रूप में विभिन्न फार्मों में नियुक्ति पा सकते हैं। यह टेस्ट देश के कई बड़े शहरों में आयोजित होता है। इस टेस्ट में वाणिज्य विषय से बारहवीं उत्तीर्ण अभ्यर्थी ही हिस्सा ले सकते हैं। यह टेस्ट वर्ष में दो बार आयोजित किया जाता है। इस क्षेत्र में प्रारंभिक दौर में ही १०-१५ हजार रुपए प्रतिमाह पारिश्रमिक आसानी से मिल जाता है। अनुभव व फील्ड नॉलेज पा लेने के पश्चात 1 लाख रुपए मासिक तक प्राप्त किए जा सकते हैं।

प्रमुख प्रशिक्षण संस्थान

द इंस्टीट्यूट ऑफ कैपिटल मार्केट डेवलपमेंट, नई दिल्ली।
मुंबई स्टॉक एक्सचेंज ट्रेडिंग इंस्टीट्यूट, मुंबई।
यूटीआई इंस्टीट्यूट ऑफ कैपिटल मार्केट, नवी मुंबई।
जेडीबी इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज ऐंड रिसर्च, नासिक।
पुणे विश्वविद्यालय, पुणे।
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

नोट: शेयर बाजार से संबंधित विभिन्न पाठ्यक्रमों की जानकारी हेतु बीएसई ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, 18-19 वां फ्लोर, बीएसई, मुंबई स्टॉक एक्सचेंज लिमिटेड, पी.जे. टॉवर, दलाल स्ट्रीट, मुंबई-01 से संपर्क किया जा सकता है।

टूल-1 बाडी मैपिंग

यह क्या है ?

बॉडी मैप हमारे शरीर की एक ऐसी तस्वीर है जिसमें अलग-अलग चीजें देखी जा सकती हैं। मसलन, उसमें आप

शरीर के विभिन्न अंगों, आनंद या दर्द का अहसास देने वाली जगहों, इंजेक्शन लगाने वाले अंगों, उपचार के प्रभाव आदि को देख सकते हैं।

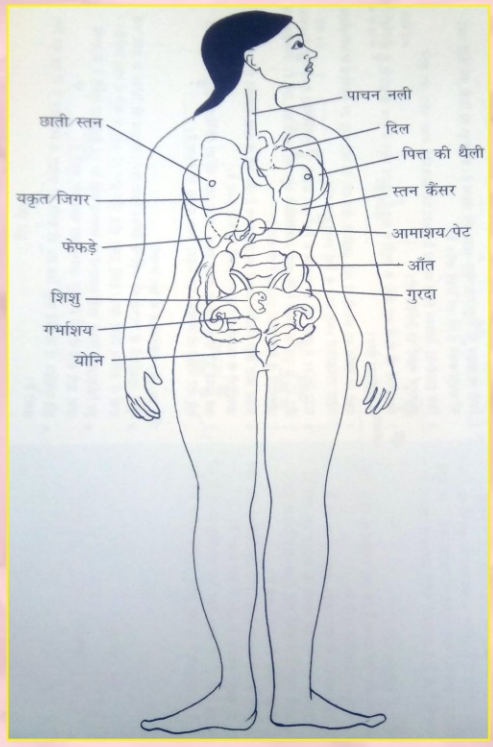

इसका प्रयोग क्यों करें ?

बॉडी मैपिंग उपयोगी है क्योंकि इससे:

सेक्स और यौनिकता, स्वास्थ्य और बीमारी, एचआईवी/एड्स, नशीली दवाओं के इस्तेमाल आदि नाजुक मसलों के बारे में सहज ढंग से बातचीत शुरू की जा सकती है।

अपनी देह के बारे में लोगों की सोच को समझा जा सकता है।

सेहत और बीमारी के बारे में लोगों की अलग-अलग राय और सोच का अंदाजा लगाया जा सकता है।

जेंडर से जुड़े तौर-तरीकों और उम्मीदों को समझा जा सकता है।

कैसे इस्तेमाल करें

1. सहभागियों से जमीन पर या एक कागज पर शरीर की बाहरी आकृति बनाने के लिए कहें। यदि किसी सहभागी को जमीन पर लिटा दिया जाए आरै उसके चारों तरफ लकीर खीचीं जाए तो यह एक्सरसाइज और भी मजेदार लगने लगती है। आप किसी व्यक्ति की परछाईं के इर्द-गिर्द भी लकीर खींच सकते हैं।

2. इस बारे में सहमति बना लें कि नक्शे में क्या-क्या दिखाना है। यह इससे तय होगा कि चर्चा किस बारे में हो रही है। मिसाल के तौर पर, जनानांगों के बारे में, बीमारी के लक्षणों के बारे में, आनंद संवेदी अंगों के बारे में, एड्स के असर या नशीली दवाओं के इस्तेमाल के बारे में। इन सारी चीजों को नक्शे पर चिन्हित करें।

3. मानचित्र के बारे में चर्चा करें और शरीर के बारे में किसी भी तरह की गलतफहमी या मिथक को स्पष्ट करें।

उपयोगी सवालों के बारे में सुझाव

यौन संक्रामक बीमारियों (एसटीआई)/एचआईवी/एड्स सहित विभिन्न बीमारियों के बारे में लोगों के ज्ञान और/या सोच क्या है ?

सेक्स और सेक्शुऑलिटी के बारे में लोगों के दृष्टिकोण और विश्वास क्या हैं ? इन दृष्टिकोणों और एचआईवी/यौन संक्रामक रोगों के प्रसार के बीच क्या संबंध है ?

यौन संक्रामक बीमारियों पर नशीली दवाओं से क्या असर पड़ता है ?

यौन हिंसा सहित हिंसा और दुराचार के बारे में चर्चा करें और उन्हें परिभाषित करें।

जेंडर आधारित कायदे कानून और संबंध 'आदर्श' औरत (या मर्द, या लड़की आदि) कैसी होती है ? इन अपेक्षाओं से औरतों पर कौन से सकारात्मक या नकारात्मक असर पड़ते हैं।

याद रखें !/फेसिलिटेटर्स के लिए टिप्पणी

समान लिंग वाले समूह में सहभागियों को ज्यादा सहज महसूस होता है। अगर सहभागियों की उम्र या वैवाहिक स्थिति भी समान हो तो और बेहतर रहता है। जगह ऐसी होनी चाहिए जहां प्राइवेसी हो ताकि सहभागि निश्चिंत होकर बात कर सकें।

पहले से ध्यान में रखें कि बॉडी मैप्स कुछ सहभागियों के जहन में दुखद यादों को जिंदा कर सकते हैं। मसलन, यदि किसी के साथ यौन दुराचार या हिंसा हुई है तो वह बॉडी मैप को देखकर बेचैन हो सकता/सकती है।

बॉडी मैप को मूल्यांकन टूल के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता है। जो लोगों ने सीखा है उसे सिर के पास लिखा जाए और जो लोग महसूस करते हैं उसे दिल के पास लिखा जाए।

टूल-2 मोटा-मोटी (या स्कैच) मैपिंग

यह क्या है ?

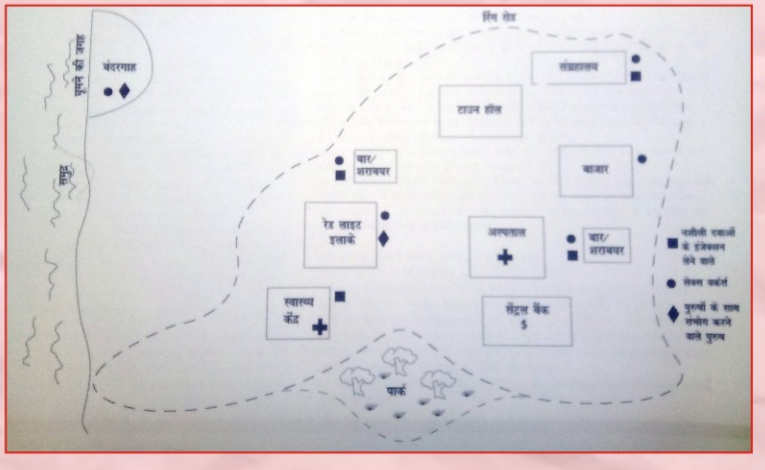

मोटा-मोटी (या स्कैच) मैप ऐसा नक्शा होता है जिसमें मुख्य आबादियों के इलाकों को दिखाया जाता है। साथ ही यह भी दर्शाया जाता है कि मुख्य आबादियों के लिए आवश्यक सेवाएं कहां-कहां उपलब्ध हैं।

क्यों इस्तेमाल करें ?

इससे यह पता चलता है कि एक समुदाय के भीतर कौन सी मुख्य आबादियां रहती हैं।

इससे समुदाय के भीतर मुख्य आबादियों के बारे में प्रचलित सोच का पता लगाने की प्रक्रिया शुरू होती है।

इससे समुदाय के लोगों तथा मुख्य आबादियों के बीच मौजूद संबंधों का पता चलता है।

इससे ये पता चलता है कि मुख्य आबादियों के लिए कौन सी सेवाएं उपलब्ध हैं और वे कहां स्थित हैं।

इस तरह के बड़े नक्शे शहर जैसे लंबे-चौड़े इलाकों के बारे में अंदाजा लगाने के लिए खासे उपयोगी साबित होते हैं।

कैसे इस्तेमाल करें ?

1. किसी भी साइज का समूह एक मोटा नक्शा बना सकता है। बड़े समूह को किसी लंबी-चैड़ी जगह का नक्शा बनाने में भी कम समय लगता है।

2. जिस इलाके का अध्ययन किया जा रहा है उसका एक मोटा-मोटी नक्शा बनाएं और उसमें महत्वपूर्ण स्थानों को चिन्हित करें।

3. सहभागियों को दो से चार लोगों के समूहों में बांट दें। प्रत्येक समूह में मुख्य आबादियों के लोग भी हों तो बेहतर होगा।

4. नक्शे पर दर्शाये गए इलाकों को छोटे समूहों के बीच बांट दें। छोटे समूह इन स्थानों के बारे में और ज्यादा जानकारियां इकट्ठा करने के लिए उनका दौरा करेंगे।

5. साइट विजिट से पहले वहां की पड़ताल के लिए मुख्य सवालों पर सहमति बना लें। मिसाल के तौर पर, यह पूछा जा सकता है कि मुख्य आबादियों के बहुत सारे सदस्य कहां रहते हैं? अगर मुख्य आबादियों के लिए सेवाएं उपलब्ध हैं तो कहां हैं ?

6. प्रत्येक छोटा समूह निर्धारित इलाकों का दौरा करता है और वहां के लोगों, खासतौर से मुख्य आबादियों के सदस्यों से उपरोक्त सवालों पर चर्चा करता है।

7. अब वापस बड़े समूह में इकट्ठा होकर उसका आदान-प्रदान कीजिए जो आपने सीखा है। इसके बाद सारे मोटे नक्शों को मिलाकर एक संयुक्त नक्शा बनाया जा सकता है।

याद रखें!/फेसिलिटेटर्स के लिए टिप्पणी

मुख्य आबादियों के सदस्यों को समूह में शामिल किया जाए। समुदाय की विजिट के समय उन्हें चर्चा में शामिल किया जाए। इससे उनके सोच और ज्ञान को नक्शे में लाने में मदद मिलेगी।

इन विजिट्स से मिलने वाली सूचनाओं को सामान्य नक्शे पर दर्ज किया जा सकता है या अपनी यात्रा वाले क्षेत्रों के बारे में समूह अलग-अलग नक्शे बना सकते हैं।

यदि मुमकिन हो तो छोटे समूह अब तक की प्रगति की समीक्षा के लिए बीच में भी एक बार मिल सकते हैं।

आई.ई.सी. मेटिरियल डवेलप्मेंट - पोस्टर श्रृंखला

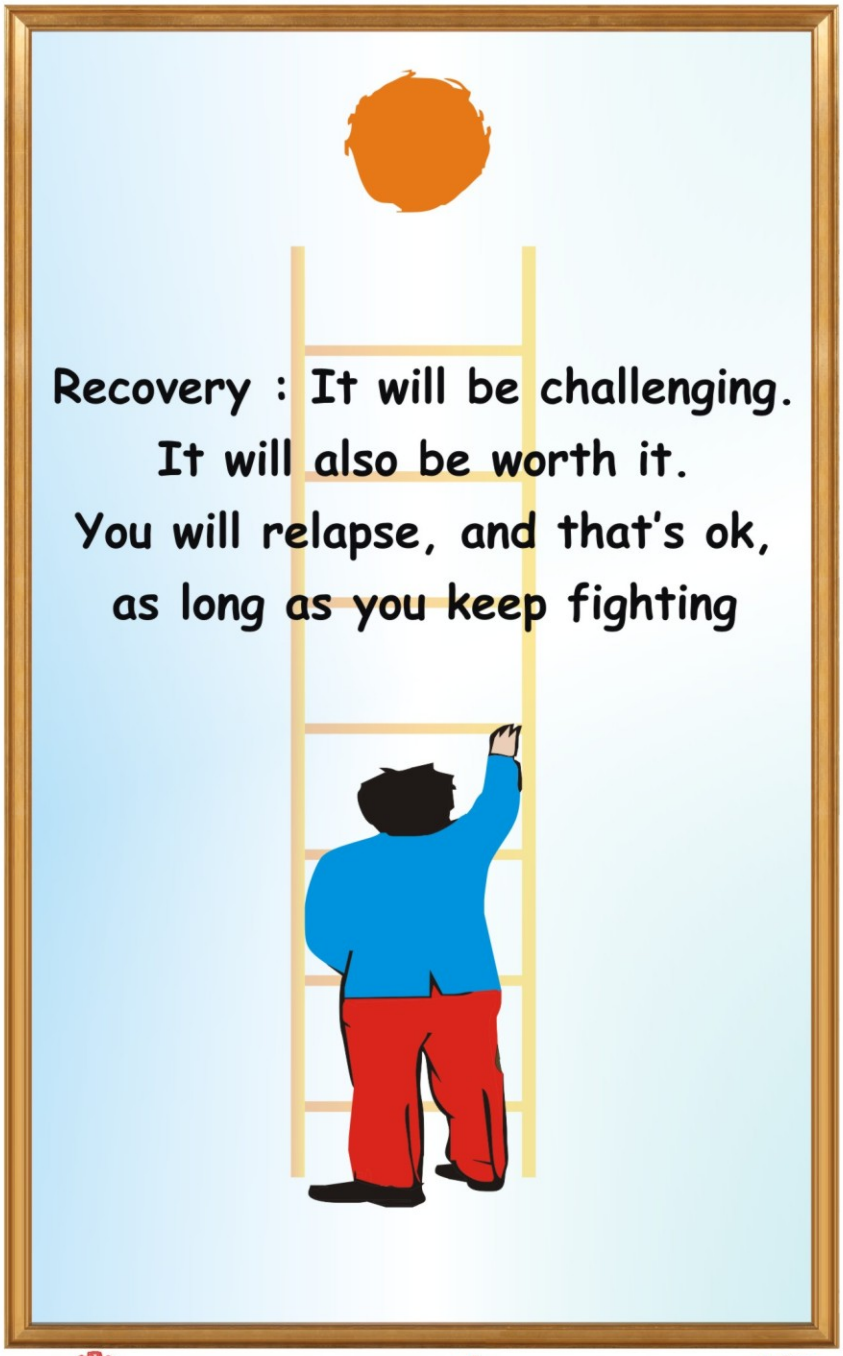

सत्यमेव जयते
Ministry of Social Justice
& Empowerment

Gunjan
Organisation for Community Development
Regional Resource & Training Centre North - II

NISD

सत्यमेव जयते
Ministry of Social Justice
& Empowerment

Gunjan
Organisation for Community Development
Regional Resource & Training Centre North - II

NISD

Gunjan Organisation for Community Development° Regional Resource & Training Centre North - II, Tapovan Road, Tehsil-Dharamshala, Distt. Kangra (H.P.) - 176057
Phone : 91-1892-235315, 9459082624, Email: rrtcnorth.hp@gmail.com, Website: www.gunjanindia.org